

Bhajan

03

वन्दे रामं सच्चिदानन्दम्

वन्दे रामं सच्चिदानन्दम् ॥

परम पावनं प्रियतमरूपम् ।
परमेशं शुभ शक्ति स्वरूपम् ।
सर्वाधारं महा सुख कन्दम् ॥ १ ॥

शरणागत जन पालक शरणम् ।
विघ्नहरं सुख शांति करणम् ।
परं पदं मंगल अरविन्दम् ॥ २ ॥

मंगल मंदिर खोलो दयामय

मंगल मंदिर खोलो दयामय,
मंगल मंदिर खोलो ॥
अति उत्कण्ठित दर्शन को जन,
खड़ा द्वार पर तेरे ।
महा मनोहर राम नाम में,
मूर्तिमान हरि होलो ॥ १ ॥

दो दिव्य दर्शन देव देव जी,
दया दृष्टि से देखो ।
उर लगा उत्संग में ले कर,
प्रेम सुरों से बोलो ॥ २ ॥

वरद वरतम कर को फिराओ,
सहित प्रेम पुचकारें ।
निज बालक में वत्सलता से,
स्नेह सुधा रस घोलो ॥ ३ ॥

भज मन रामं महा अभिरामम्

भज मन रामं महा अभिरामम् ॥

अस्ति भाति शुचि प्रियस्वरूपम् ।

त्रिगुणातीतं चैतन्य रूपम् ।

जगदाधारं जगद् विरामम् ॥ १ ॥

शक्तिमयं पुरुषोत्तम ईशम् ।

भक्त-वत्सलं श्री जगदीशम् ।

पूर्ण पुरुषं पूर्ण कामम् ॥ २ ॥

राम नाम लौ लागी

राम नाम लौ लागी ।
अब मोहे राम नाम लौ लागी ॥

उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,
भक्ति भवानी जागी ॥ १ ॥

मिट गये संशय भव भय भारे,
भ्रान्ति भूल भी भागी ॥ २ ॥

पाप हरण श्री राम चरण का,
मन बन गया अनुरागी ॥ ३ ॥

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा ॥

मन मुख माया मुख बन मोही,
भरम में भटका बहुतेरा ॥ १ ॥

अशरण-शरण की चरण शरण में,
निश दिन बने बसेरा ॥ २ ॥

गाऊँ मैं राम राम मधुर धुन,
सब दिन सांझ सबेरा ॥ ३ ॥

तेरे मेल में मिल हो जायें,
'मैं' तेरा 'तू' मेरा ॥ ४ ॥

जगन्मात जगदम्बे तेरे जयकारे

जगन्मात जगदम्बे तेरे जयकारे ।

तू शक्ति भगवती भवानी ।
महिमामयी महामाया बखानी ।
विश्व रचे पाले संहारे ॥ १ ॥

शांति करी मंगल सुख रूपा ।
तू वरदा है दिव्य अनूपा ।
शरणागत के काज संवारे ॥ २ ॥

निज जन त्राण-परायण देवी ।
असुर हरि दुर्गा सुर सेवी ।
श्री लक्ष्मी जन तुझे पुकारे ॥ ३ ॥

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम ॥

अशरण शरण अघ हरण चरण में,
मिले शांति विश्राम ॥ १ ॥

चिंतन ध्यान जाप का करना,
गाना हरि गुण ग्राम ।
सुरति शब्द संयोग रूप यह,
सहज योग है नाम ॥ २ ॥

राम राम मय नाद मधुरतम,
जब हो बिना विराम ।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण,
सुधर गये सब काम ॥ ३ ॥

राम शब्द जब चले निरंतर,
भीतर आठों याम ।
सत्य समझिए फले मनोरथ,
मिला परम पद धाम ॥ ४ ॥